MP Board Class 7th Notes Sanskrit Chapter 4 चाणक्यवचनानि

चाणक्यवचनानि हिन्दी अनुवाद

चाणक्यः चन्द्रगुप्तमौर्यस्य गुरुः आसीत्। सः महान राजनीतिज्ञ अर्थशास्त्रज्ञश्च आसीत्। "चाणक्यनीतिः कौटिलीयमर्थशास्त्रम्" इति द्वौ ग्रन्थौ प्रसिद्धौ स्तः। चाणक्यः नन्दवंशस्य उन्मूलनं कृत्वा चन्द्रगुप्तमौर्यं सिंहासने स्थापितवान्। तस्य वचनानि अत्र प्रस्तूयन्ते

अनुवाद :
चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु थे। वे राजनीति के एक महान ज्ञाता और अर्थशास्त्र के जानकार थे। 'चाणक्यनीति तथा कौटिलीय अर्थशास्त्र' इनके दो प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। चाणक्य ने नन्दवंश का विनाश करके चन्द्रगुप्त मौर्य को सिंहासन पर बैठाया। उनके वचनों को यहाँ प्रस्तुत किया जाता है-

माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये, हंसमध्ये बको यथा॥१॥

अनुवाद :
जिन माता और पिता ने बालकों को शिक्षा नहीं दिलायी, वे (दोनों) शत्रु हुआ करते हैं। (अशिक्षित) बालक सभा में उसी तरह शोभा नहीं पाते जिस तरह हंसों के मध्य बगुला शोभा नहीं पाता।

अधमाः धनमिच्छन्ति, धनं मानं च मध्यमाः।
उत्तमाः मानमिच्छन्ति, मानो हि महतां धनम्॥ २॥

अनुवाद :
नीच व्यक्ति धन की इच्छा किया करते हैं। मध्यम श्रेणी के व्यक्ति धन और मान-सम्मान दोनों को ही चाहते हैं। उत्तम श्रेणी के व्यक्ति मात्र सम्मान ही चाहते हैं, क्योंकि सम्मान ही महापुरुषों के लिए धन हुआ करता है।

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥३॥

अनुवाद :
जल की बूंदों को लगातार गिराते रहने से घड़ा भर जाता है। सभी विद्याओं, धर्म तथा धन के विषय में यही कारण हुआ करता है अर्थात् विद्या, धर्म तथा धन का संचय थोड़ा-थोड़ा करके भी बहुत अधिक हो जाता है।

सुखार्थी चेत्त्यजेत् विद्या, विद्यार्थी चेत्त्यजेत्सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतस्सुखम्॥४॥

अनुवाद :
सुख चाहने वाले को विद्या का त्याग कर देना चाहिए तथा विद्यार्थी को (विद्या की चाहना करने वाले को) सुख का त्याग कर देना चाहिए। सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ और विद्यार्थी को सुख कहाँ? अर्थात् सुख की इच्छा करने वाले व्यक्ति को विद्या नहीं मिल सकती और विद्या चाहने वाले व्यक्ति को सुख नहीं मिल सकता।

तक्षकस्य विषं दन्ते मक्षिकायाः विषं मुखे।
वृश्चिकस्य विषं पुच्छे, सर्वाङ्गे दुर्जनस्य तु॥५॥

अनुवाद :
तक्षक प्रजाति के सर्प के दाँत में विष होता है। मक्खी के मुख में विष होता है। बिच्छू की पूँछ में विष होता है परन्तु दुष्ट व्यक्ति के तो सम्पूर्ण शरीर में ही विष होता है।

कामधेनुगुणा विद्या सर्वदाफलदायिनी।
प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तधनं स्मृतम्॥६॥

अनुवाद :
सभी फलों को प्रदान करने वाली विद्या में कामधेनु के समान गुण होते हैं। परेदश में रहने पर माता के समान विद्या होती है। इस तरह विद्या छिपा हुआ धन कहा जाता है।

एकेनापि सुवृक्षण पुष्पितेन सुगन्धिना।
वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा॥ ७॥

अनुवाद :
एक ही श्रेष्ठ वृक्ष पर फूलों के खिल जाने से उनकी अच्छी गन्ध ने उस सम्पूर्ण वन को सुगन्धित उसी प्रकार कर दिया, जिस तरह सुपुत्र के द्वारा वंश को सुगन्धित कर दिया जाता है (श्रेष्ठ बना दिया जाता है)।

चाणक्यवचनानि शब्दार्थाः

बकः = बगुला। महताम् = श्रेष्ठ लोगों का। अधमाः = निम्न कोटि के। तक्षकः = सर्प विशेष। मक्षिका = मक्खी। वृश्चिकः = बिच्छू। पुच्छे = पूँछ में। प्रवासे = यात्रा में या परदेश में रहने पर। वासितम् = सुगन्धित। कामधेनु गुणा = इच्छा पूरी करने वाली गाय के समान गुण वाली। मातृसदृशी = माता के समान।

---

https://www.evidyarthi.in/